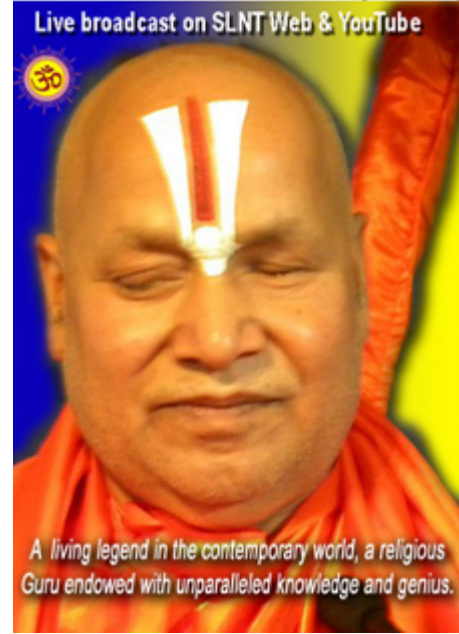


॥ सिंगापुर में श्रीरामचरितमानस कथा ॥

॥ कथा व्यास: जगद्गुरु रामभद्राचार्य ॥



कार्यक्रम : 14-26 जून, 2011. सोम-शनि: शाम 7 बजे से. रविवार: सुबह 11 बजे से 12:30 बजे.

स्थान : श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर, 5 चन्दर मार्ग, सिंगापुर 219528

संपर्क सूत्र : +65 62930195, +65 62930460 (फ़ैक्स) **वेब :** www.lakshminarayantemple.com



MRT Stop: Little India (NE Line), Exit E. **Bus Stops:** Serangoon Rd - Tekka Maket (23, 64, 65, 66, 67, 131, 139, 147), Bukit Timah Rd - Little India MRT (48, 56, 57, 66, 67, 131, 166, 170, 960, 980).

॥ जगद्गुरु रामभद्राचार्य ॥



॥ परमार्थ के कारने साधुन धरा सरीर ॥

जन्म	मकरसंक्रान्ति संवत् २००६ (ई १९५०) के दिन जौनपुर (उत्तर प्रदेश) में वसिष्ठगोत्रिय सरयूपारीण ब्राह्मण परिवार में माता शचीदेवी और पिता राजदेव मिश्र के घर।
दृष्टिबाधन	दो मास की आयु में रोहे के कारण। कदापि ब्रेल व अन्य साधनों का उपयोग नहीं।
शिक्षा	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, से शास्त्री, आचार्य, विद्यावारिधि और वाचस्पति।
संन्यास	कार्तिकपूर्णिमा, १९८३, को श्री १००८ रामचरणदास महाराज फलाहारी से विरक्त दीक्षा प्राप्त।
तुलसी पीठ	१९८७ में चित्रकूट में स्थापित धार्मिक और सामाजिक सेवा संस्थान।
जगद्गुरु	जून २४, १९८८, को जगद्गुरु रामानन्दाचार्य चयनित, अगस्त १, १९९५ को अभिषिक्त।
विश्वविद्यालय	विकलांग विद्यार्थियों के लिए जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय के संस्थापक।
मानस संपादन	५० पुरानी और नयी प्रतियों के आधार पर रामचरितमानस की प्रामाणिक प्रति के सम्पादक।
रचनाएँ	प्रस्थानत्रयी और अष्टाध्यायी पर संस्कृत भाष्य, ४ महाकाव्य, ८० से अधिक पुस्तकें और ग्रन्थ।
इंटरनेट स्रोत	en.wikipedia.org/wiki/Jagadguru_Rambhadracharya (विकिपीडिया पृष्ठ), www.rambhadracharya.org (औपचारिक), www.jrhu.com (विश्वविद्यालय)।
रोचक तथ्य	<ul style="list-style-type: none">• तीन वर्ष की आयु में प्रथम काव्य रचना • पाँचवें वर्ष में गीता और आठवें वर्ष में रामचरितमानस का पूर्ण ज्ञान• बीए और एमए में ३ स्वर्ण पदक • वाराणसी में ५० विद्वानों से शास्त्रार्थ में बिना पानी पिए विजयी (१९७६)• संयुक्त राष्ट्र में शान्ति पर वक्तव्य (२०००) • उप्र सरकार द्वारा विकलांग विवि के आजीवन कुलाधिपति नियुक्त• २२ भारतीय और विदेशी भाषाओं का ज्ञान • रामचरितमानस के अद्वितीय कथाकार और भाष्यकार• जगद्गुरु वल्लभाचार्य के पश्चात् ५०० वर्षों में प्रथम प्रस्थानत्रयी पर संस्कृत भाष्य रचनेवाले प्रथम आचार्य